चुनाव प्रचार डायरी–29/04/2014

–अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

30 अप्रैल को होने वाले मतदान के लिए चुनाव प्रचार कल समाप्त हो गया। मैंने अमृतसर में अपना चुनाव प्रचार समाप्त किया। उम्मीदवारी घोषित होने से लेकर अब तक सात सप्ताह तक चुनाव प्रचार चला। लंबे समय तक लगातार चुनाव प्रचार करना काफी चुनौतीपूर्ण काम है। समर्पित समर्थकों की टीम और चुनाव मशीनरी के अलावा चुनाव प्रचार में मतदाताओं की दिलचस्पी बनाए रखने के लिए किसी भी उम्मीदवार को अपने दिमाग का बहुत सोच समझकर इस्तेमाल करना पड़ता है। सात सप्ताह के दौरान बार बार एक ही बात को दोहराने से मतदाताओं की दिलचस्पी खत्म हो सकती है और वे बोर हो सकते हैं।

चुनाव प्रचार में आधुनिक तकनीक काफी मददगार साबित हुई है। रोजाना सुबह मेरा ब्लॉग मेरे चुनाव प्रचार का अभिन्न अंग रहा। इसने मुझे अमृतसर के लाखों लोगों से जोड़ दिया। इनमें ऐसे लोग शामिल थे जो फेसबुक पर मुझे फॉलो कर रहे थे या उन्हें रिपोस्ट मिल रहे थे। मैं रोजाना दस–पन्द्रह कार्यक्रमों को संबोधित करता था। महत्वपूर्ण नागरिकों से मिलने उनके घर जाता था, जहां सैकड़ों लोगों के साथ मेरी सीधी बातचीत होती थी। गांवों में अकाली दल संगठन काफी मजबूत और प्रतिबद्ध है।

चुनाव प्रचार में मेरा कांग्रेस से सामना हुआ जिसके पास समझ खत्म हो चुकी है। कैप्टन ने मुझसे भी उसी तरह निपटने की सोची जैसे वह अकाली दल से पूरे समय निपटते रहे– अक्खडरूपन दिखाते रहो, अशिष्ट रहो और बढ़–चढ़कर आरोप लगाओ–कुछ तो सही लगेगा ही। दुर्भाग्यवश उन्हें इस बार अलग तरह के चुनाव प्रचार का सामना करना पड़ा। मेरा चुनाव प्रचार राष्ट्रीय स्तर पर और अमृतसर के क्षेत्र में मुद्दों पर आधारित रहा। मैंने शिष्टता के साथ लेकिन कड़ाई से उनका मुकाबला किया। मेरे खिलाफ कैप्टन की निष्क्रिय रणनीति सफल नहीं हो पाई।

चुनाव प्रचार कैसे गढ़ा जाए?

चुनाव प्रचार जैसे जैसे अंतिम दो चरणों में पहुंच रहा है, कांग्रेस पार्टी का चुनाव प्रचार किताबी भाषा बनकर रह गया है कि कैसे चुनाव प्रचार आयोजित नहीं किया जाए। कांग्रेस के नेताओं के भाषण लिखने वालों को लग रहा है कि कुछ नीरस बिन्दुओं जैसे राज्यों को केन्द्र की सहायता, आरटीआई, खाद्य विधेयक, भूमि विधेयक चुनाव प्रचार के मुख्य मुद्दे रहे। उन्होंने जनता की पूरी तरह अनदेखी की। विधानसभा चुनावों के नतीजे घोषित होने पर, पूरे देश को दिसम्बर में यह अहसास हो गया था कि कांग्रेस का सफाया होने वाला है। कांग्रेस के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर थी।

इसके बावजूद नरेन्द्र मोदी ने लोकप्रियता हासिल की, कांग्रेस सोच रही थी कि अगर चिदम्बरम, सिब्बल, तिवारी, जयराम, आनंद शर्मा और बेनीप्रसाद अक्खड़ और अभद्र रहेंगे तो वे मोदी के मिथक को खत्म कर देंगे। उन्होंने खुद को ही खत्म कर लिया। इनमें से अधिकतर या तो चुनाव नहीं लड़ रहे हैं या उनके अपने–अपने निर्वाचन क्षेत्रों में तीसरे नम्बर पर पहुंचने की उम्मीद है।

जयराम और सिब्बल कांग्रेस के लिए ईश्वर के दिए हुए विशेष उपहार रहे हैं। उन्होंने एक नया चुनाव प्रचार गढ़ने का फैसला किया। वह बच्चों की तरह सोचकर ताली पीट रहे थे कि 'टॉफी चुनाव प्रचार' काम कर रहा है चाहे वह झूठ की बुनियाद पर हो। राहुल ने केजरीवाल की तरह करने का फैसला किया। पिछले दस वर्ष तक सीबीआई का दुरुपयोग करके सिब्बल आज सीबीआई को गाली देकर कह रहे हैं कि वह मोदी के खिलाफ इशरत जहां मामले में मुकदमा नहीं चला रही है जिसमें उसे कोई सबूत नहीं मिला है। मीडिया में नया चमकता चेहरा, सुरजेवाला ने मोदी के साथ तस्वीर खिंचवाने वाली भीड़ में एक शरारती तत्व को ढूंढ लिया। उनकी आत्मसंतुष्टि को देखकर लगता है कि उन्हें यकीन है कि कांग्रेस ने इस आधार पर चुनाव जीता है। जब कहीं और कोई सफलता नहीं मिली तो ''स्नूपगेट'' को फिर से इस उम्मीद में हवा देनी शुरु कर दी कि इस बार शायद सफलता मिल जाएगी। लेकिन जब कहीं कुछ ठीक नहीं चल रहा हो तो वे बड़ी–बड़ी गल्तियां कर सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। बिना किसी मुद्दे के और बेमतलब चुनाव प्रचार से चुनाव लड़ने में दिक्कतें आती हैं। कांग्रेस अपने ही जाल में फंस चुकी है।

*****